प्राक्कथन

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय है "ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में युग चेतना।" जब मैंने प्रसिध्द हिन्दी नाटककार ज्ञानदेव अग्निहोत्रीका अंतिम नाटक 'दंगा' पढ़ा तभी मैंने जान लिया कि यह लेखक अन्य लेखकों से अलग है। इस नाटक के विषय, संवाद और प्रस्तुतीकरणने मुझे आकर्षिक कर लिया। मैंने उनके दो-तीन नाटक और पढें तो मुझे महसूस हुआ कि इनके किसी एक नाटक परही लघु शोध-प्रबन्ध लिखना याने इस नाटककार के प्रति पूरा न्याय न करना होगा। इसलिए मैंने उनके सारे नाटकों का अध्ययन बारिकीसे करने हेतु उपर्युक्त विषय चुन लिया और ज्ञानदेव अग्निहोत्री को खत भी लिखा तो जवाब उनका नही बल्कि उनकी पत्नी का आया। उन्होने अपने खत में लिखा था कि ज्ञानदेवजीका स्वर्गवास होकर एक महीना गुजर गया है। मैं तो विचारचक्र में फँस गया। क्योंकि ज्ञानदेवजी के बारे में अन्य नाटककारों की तरह कुछ ज्यादा शोध और समीक्षात्मक नहीं लिखा गया था इस बात की मुझे पूरी जानकारी थी। उनके सारे नाटक मिलेंगे या नहीं यह भी संदेह था। फिर भी निश्चय ही किया है तो पीछे हटना गवारा नहीं लग रहा था। इसलिए संकल्प कर लिया कि लघु शोध-प्रबन्ध लिखूंगा तो उपर्युक्त विषयपरही।

इस विषय का अध्ययन प्रारंभ करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे -

(१) ज्ञानदेव अग्निहोत्री का जीवन कैसे बीता ?

(२) अग्निहोत्रीजीने किस प्रकार के नाटक लिखें हैं ?

(३) उनके नाटकों की मूल चेतना क्या है ?

(४) राष्ट्रीय चेतना उनके किन-किन नाटकों मे प्राप्त होती है ?

(५) सामाजिक चेतना उनके किन किन नाटकों में प्राप्त होती है ?

(६) क्या मानवतावादी चेतना उनके सभी नाटकों में प्राप्त होती है ?

(७) अग्निहोत्रीजी के नाटक रंगमंच की दृष्टि से कैसे हैं ?

अध्ययन के उपरान्त इन प्रश्नों के जो उत्तर मुझे प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में लिख दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों मे विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री के जीवन परिचय एवं कृतित्व को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। इस अध्याय मे उनके जन्म, माता-पिता, शिक्षा, नौकरी, विवाह, परिवार, स्वभावगत विशेषताएँ और मृत्यु आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत किया है। उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओंपर प्रकाश डाला है। 'कृतित्व' के अंतर्गत नाटक, नाट्य संस्थाएँ तथा प्रयोग, पुरस्कार, फिल्म कथा लेखन आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। अंत में अध्याय का निष्कर्ष दिया है।

द्वितीय अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री के सारे नाटकों का विवेचन प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है। कथावस्तु का विवेचन करते समय उनके हर नाटक के विवेचन के अंत में नाटक के बारे में निष्कर्ष दिए हैं। इसमें प्राप्त नाटक किस कोटि में आते हैं, नाटक के नायक-नायिका आदि बातों को प्रस्तुत किया है। अध्याय के अन्त में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में प्राप्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डाला है। इसमें चेतना शब्द का अर्थ राष्ट्रीय चेतना से तात्पर्य आदि को स्पष्ट किया है। नेताओं में अधिकारियों में, प्रशासकों में तथा सामान्य लोगों में मिलनेवाली राष्ट्रीय चेतना को दिखाकर ज्ञानदेवजीके नाटक राष्ट्रकी प्रगति में किस तरह योगदान करते हैं इसे स्पष्ट करने की कोशिश की है। अध्याय के अन्त में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों मे स्थित सामाजिक चेतना को उद्घाटित किया है। इसमें समाज का स्वरुप, अर्थ, परिभाषा, वर्तमान समाज की स्थिति, सामाजिक समस्याओंका चित्रण, बेकारी की समस्याके प्रति जागरुकता, साहुकारी स्वार्थी वृत्ति का विरोध, सामाजिक समता का समर्थन, कालबाह्य रुढियों का विरोध, सामाजिक पतन और मूल्यों की टूटनपर व्यंग्य आदि का विवेचन प्रस्तुत किया हैं। ज्ञानदेवजी के नाटकों में पायी जानेवाली सामाजिक परिवर्तन की चेतना को दिखाकर अध्याय के अंत में प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों में व्याप्त मानवतावादी चेतना का विवेचन है। मानवतावाद की परिभाषा, मानवतावाद की आवश्यकता, मानवतावादी चेतना की प्रतिष्ठापना, मानव प्रेम, सत्य, अहिंसा, भाईचारा मददगारवृत्ति आदिपर प्रकाश डाला है। इसके उपरान्त मानवतावाद का मजाक उडानेवालोंपर व्यंग्य और मानवतावाद की महत्ता को चित्रित करनेवाले नाटकों का साधार विवेचन किया है। अध्याय के अन्त में निष्कर्ष को स्पष्ट किया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के षष्ठ अध्याय में ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटक मंचीयता की दृष्टि से कैसे हैं, इस बात पर प्रकाश डाला है। इसमें नाटकों में प्राप्त प्राक्कथा-योजना, ध्वनि, दृश्य और अभिनय आदि बातों को स्पष्ट किया है। अध्याय के अन्त में प्राप्त निष्कर्षों को दर्ज किया है।

प्रबन्ध के अन्त में उपसंहार दिया गया है। प्रस्तुत उपसंहार प्रबन्ध का सार-रुप है। इसमें पूर्व निवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दतिसे निकाले गए निष्कर्ष संक्षिप्त रुप में दिए गए हैं। उपसंहार के उपरान्त परिशिष्ट और संदर्भग्रन्थ सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हित-चिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

मेरे गुरुवर्य श्रध्देय डॉ. अर्जुन चव्हाणजी के आभार के लिए किन शब्दों का प्रयोग करुं? यहाँ मेरे पास शब्द नहीं है। शब्दों में आभार प्रकट करना याने उनके स्नेह को छोटा करना है। आप बी. ए. भाग एक से लेकर आजतक मेरे गुरु रहे है। और आगे भी मुझे आपसे इसी तरह मार्गदर्शन पाना है। इस लघु शोध-प्रबन्ध के विषय चयन से लेकर प्रस्तुतीकरण तक आपका मार्गदर्शन मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ है। आपके पाससे मैंने अपनी हैसियतसे जो कुछ पाया है उसीकी परिणति यह लघु शोध-प्रबन्ध है। बाधाओंसे भरे जीवन में आपका मार्गदर्शन मेरे लिए आलोकस्तंभ है। इस श्रध्दा के बदले में आभार या धन्यवाद जैसे शब्द प्रयोग से उऋण होने की कल्पना ही अनुचित होगी। औपचारिक शब्द-प्रयोग से आपके स्नेह को छोटा नहीं करना चाहता। बस्स्, भविष्य में भी आपके आशीर्वाद तथा ऋण में रहना चाहूँगा।

मैं श्रध्देय सुश्री राधा अग्निहोत्री और उनके बेटे अपूर्व का आभार प्रकट करना अपना फर्ज मानता हूँ क्योंकि आपने इस प्रबन्ध को पूरा करने में मेरा काफी सहायता

की है। मेरी शंकाकुशंकाओं को दूर भी किया है। अतः मैं आपका हृदय से ऋणी हूँ। इस विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. वसंत मोरे जी का आभार प्रकट किये बिना मैं आगे बढ़ नहीं सकता।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. पी. एस. पाटीलजी के मिलनसार स्वभाव के प्रति मैं हमेशा आकर्षित रहा हूँ। उनके प्रति आभार प्रकट करके मैं उनके ऋण से मुक्त होने का दादस नहीं कर सकता। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रन्थों की प्राप्ति मुझे शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर तथा कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज, इस्लामपुर के ग्रंथालयों से हुयी। अतः कर्मवीर भाऊराव पाटील कॉलेज के सहायक ग्रंथपाल विजय तिबीले और शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थपाल तथा सभी कर्मचारियों का आभारी हूँ। पूज्य माता-पिता तथा बड़े भाई सुरेश के आशीर्वाद के बिना मेरे लिए हर कार्य असम्भव है। उनके आशीर्वादसेही मैं यह कार्य पूरा कर सका हूँ। मेरे एक और गुरु श्री. मोकाशी, सहकर्मी श्री. रघुनाथ शिरगांवकर, मेरे मित्र चतुर्भुज गिड्डे, अरुण गंभिरे, अरिफ जमादार, पोलीस टाईम्स के कार्यकारी सम्पादक नारायण कुपेकर, अपने स्नेहसे हमेशा मुझे यश की और प्रोत्साहित करनेवाली मेरी स्नेही वैशू के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। इस शोध-प्रबन्ध को कम्प्युटर द्वारा आकर्षक टाईप करनेवाले मेरे ज्येष्ठ स्नेही तानाजी शेलके तथा साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुयी उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षणार्थ विनम्रतासे विद्वानों के सामने प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर। शोध-छात्र

दिनांक : २५ दिसम्बर ९५

Gawali

(रमेश विठ्ठल गवळी)